आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

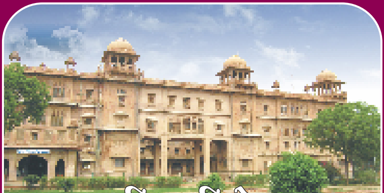

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13 अंक : 12 अगस्त, 2026 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

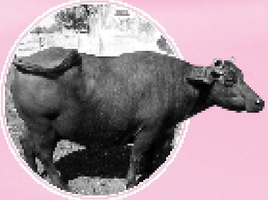

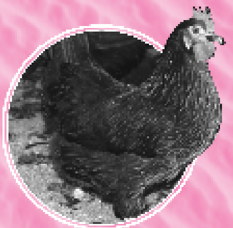

कुलगुरु सन्देश

वृक्षारोपण : पर्यावरण संरक्षण और सुरक्षित भविष्य की ओर एक महत्वपूर्ण कदम

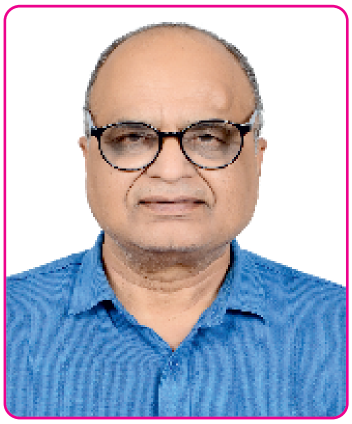

स्वच्छ वायु, निर्मल जल, उपजाऊ मिट्टी, हरित वनस्पति और समृद्ध जैव विविधता के बिना स्वस्थ एवं संतुलित जीवन की कल्पना संभव नहीं है। मानव और प्रकृति का संबंध सदियों पुराना तथा अत्यंत गहरा है। मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रकृति पर निर्भर है। ऐसे में पर्यावरण की रक्षा करना केवल प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने का विषय नहीं, बल्कि मानव जीवन और आने वाली पीढ़ियों के उज्ज्वल भविष्य की सुरक्षा से जुड़ा महत्वपूर्ण दायित्व भी है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को सदैव विशेष सम्मान प्रदान किया गया है। प्राचीन काल से ही हमारे समाज में वृक्षों, नदियों, पर्वतों और अन्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की परंपरा रही है। पीपल, बरगद, नीम, बेल, अशोक आदि अनेक वृक्षों का धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व आज भी हमारे जीवन में विद्यमान है। भारतीय जीवन पद्धति ने सदैव प्रकृति के साथ संतुलन एवं सामंजस्य स्थापित करने का संदेश दिया है। वास्तव में प्रकृति का संरक्षण ही उसके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है। वर्तमान समय में तेजी से बढ़ती जनसंख्या, अनियोजित शहरीकरण, औद्योगिकीकरण और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने पर्यावरणीय संतुलन के समक्ष गंभीर चुनौतियां उत्पन्न कर दी हैं। विकास की बढ़ती आवश्यकताओं के कारण वनों की कटाई और भूमि उपयोग में परिवर्तन लगातार बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप वन क्षेत्र में कमी के साथ–साथ वायु, जल एवं मृदा प्रदूषण जैसी समस्याएं भी गंभीर होती जा रही हैं। जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापवृद्धि के कारण मौसम का स्वरूप भी तेजी से बदल रहा है। कहीं अत्यधिक वर्षा और बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होती है, तो कहीं सूखा और जल संकट गंभीर रूप धारण कर लेते हैं। बढ़ती गर्मी, अनियमित मानसून और प्राकृतिक आपदाओं की घटनाएं इस बात का संकेत हैं कि पर्यावरण के साथ संतुलन बनाए रखना अब पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है। इन परिस्थितियों में वृक्षारोपण पर्यावरण संरक्षण का एक सरल, प्रभावी और दीर्घकालिक उपाय है। वृक्ष पक्षियों एवं वन्यजीवों को आश्रय प्रदान करने के साथ–साथ मानव एवं पशुओं के लिए फल, चारा, औषधीय सामग्री और छाया का महत्वपूर्ण स्रोत भी हैं। इसलिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाना और लगाए गए पौधों का संरक्षण करना पर्यावरणीय संतुलन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। केवल पौधारोपण करना ही पर्याप्त नहीं है। पौधों को नियमित पानी, सुरक्षा और देखभाल प्रदान करना भी उतना ही आवश्यक है। एक पौधे को पूर्ण विकसित वृक्ष बनने में कई वर्ष लगते हैं। इसलिए प्रत्येक पौधे को एक जिम्मेदारी के रूप में अपनाते हुए उसके संरक्षण का संकल्प लेना चाहिए। यदि लगाए गए पौधों की उचित देखभाल सुनिश्चित की जाए, तो वृक्षारोपण अभियान का वास्तविक उद्देश्य सफल हो सकता है। पर्यावरण संरक्षण के इस महत्वपूर्ण अभियान में किसान एवं पशुपालक भी प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। आज विभिन्न सरकारी विभागों, विश्वविद्यालयों, शैक्षणिक संस्थानों, सामाजिक संगठनों और गैर–सरकारी संस्थाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालयों की विभिन्न इकाइयां भी जागरूकता कार्यक्रमों, प्रशिक्षणों एवं वृक्षारोपण अभियानों के माध्यम से समाज को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इन प्रयासों की सफलता तभी संभव है, जब आमजन भी इसमें सक्रिय रूप से सहभागी बने और वृक्षारोपण को केवल एक कार्यक्रम न मानकर अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाए। मानसून का मौसम पौधारोपण के लिए सबसे अनुकूल समय होता है। इस अवसर का लाभ उठाते हुए हमें अपने घरों, कार्यालयों, विद्यालयों, खेतों, गांवों और आसपास के क्षेत्रों में अधिक से अधिक पौधे लगाने चाहिए। आइए, इस मानसून में हम सभी मिलकर हरित एवं स्वच्छ भविष्य की दिशा में एक सार्थक कदम उठाएं। केवल पौधे लगाने का नहीं, बल्कि उन्हें वृक्ष बनने तक संरक्षित करने का संकल्प लें। आज लगाया गया एक पौधा आने वाले वर्षों में किसी के लिए छाया, किसी के लिए फल, किसी जीव के लिए आश्रय और पूरे समाज के लिए स्वच्छ वायु का आधार बन सकता है।

डॉ. सुमंत व्यास

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

अनुसंधान में नवाचारों का बौद्धिक संपदा संरक्षण विषय पर व्याख्यान

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 8 जुलाई को बौद्धिक संपदा संरक्षण विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि संकाय सदस्यों एवं विद्यार्थियों का शोध कार्य नवाचार युक्त हो एवं कार्य के प्रति संतुष्टि का भाव हो। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को शोध के कार्य क्षेत्र का सकारात्मक चुनाव करने, तकनीको की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं का व्यापक विश्लेषण को केन्द्रित करते हुए शोध एवं नवाचारों हेतु प्रेरित किया। महाविद्यालय की एलुमनाई डॉ. भारती जैन द्वारा "नवाचार, रचनात्मकता और विचार–मंथन : अनुसंधान परिणामों को संरक्षित बौद्धिक संपदा में परिवर्तित करना" विषय पर व्याख्यान दिया गया एवं इस दौरान संवादात्मक सत्र का आयोजन किया गया। डॉ. भारती जैन द्वारा व्याख्यान में संकाय सदस्यों के साथ पेटेंट और कॉपीराइट के दायरे और स्नातकोत्तर एवं पीएचडी अनुसंधान कार्य के स्वरूप में संभावित सुधारों पर चर्चा की, ताकि इसे संरक्षित बौद्धिक संपदा में परिवर्तित किया जा सके। अधिष्ठाता प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने स्वागत भाषण देते हुए कहा कि विद्यार्थियों का शोध कार्य विषय विशिष्ट एवं समाज के लिए लाभकारी होना चाहिए। उन्होंने शोध मे बौद्धिक संपदा संरक्षण पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत धन्यवाद भाषण देते हुए प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि शोधार्थियों को शोध के उद्देश्य निर्धारित करते हुए रणनीतिक विश्लेषण करना चाहिए ताकी विविध क्षेत्रों में विकास की संभावनाएं प्रबल हो सके। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक एवं विद्यार्थी मौजुद रहे। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ. अशोक गौड़ द्वारा किया गया।

पशुचिकित्सकों हेतु रोजगार व्यापकता पर व्याख्यान

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 17 जुलाई को "पशुचिकित्सक द्वारा शोध एवं अनुसंधान का रोजगार के रूप में चयन" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ प्रधान शोधकर्ता, स्ट्राइकर न्यूरोवस्कुलर, कैलिफोर्निया (यू.एस.ए.) एवं वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के एलुमनाई डॉ. मनीष तनेजा इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि इस प्रकार के व्याख्यान विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की विषय विशेषज्ञता बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण रहेगे तथा शोध की दिशा में भविष्य निर्माण हेतु सार्थक सिद्ध होंगे। डॉ. तनेजा ने शोध के क्षेत्र में पशुचिकित्सक की भूमिका एवं वैश्विक पटल में पशुचिकित्सकों हेतु रोजगार के विभिन्न आयामों को विस्तार से बताया। इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों को विदेश में शिक्षा एवं शोध हेतु आवश्यक परीक्षाओं के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के अंत में अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन डॉ. अशोक कुमार ने किया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में पौधारोपण अभियान

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान, विश्वविद्यालय, बीकानेर में दिनांक 25 जुलाई को कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास की अध्यक्षता में पौधारोपण अभियान चलाया गया। इस अवसर पर कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने विश्वविद्यालय परिसर में खेजड़ी एवं शहतूत के पौधें लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया और पौधों की देखभाल एवं सुरक्षा हेतु निर्देशित किया। इस अवसर पर अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी, निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. पंकज थानवी, परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनीता पारीक, प्रभारी निदेशक कार्य (भू संपदा) डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़ सहित विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण केंद्र द्वारा जागरूकता कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रोद्योगिकी केंद्र द्वारा 25 जुलाई को संवित शिक्षण संस्थान, कैलाशपुरी बीकानेर में छात्र–छात्राओं हेतु एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केन्द्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने इस अवसर पर अस्पतालों से निकलने वाले जैविकीय अपशिष्ट का मानव स्वास्थ्य व वातावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में विद्यार्थियों को अवगत करवाया। केंद्र के सह–अन्वेषक डॉ. देवेंद्र चौधरी ने जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का उचित निस्तारण एवं उससे फैलने वाली बीमारियों के बारे मे जानकारी दी। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं को रेबीज से बचाव व टीकाकरण की जानकारी भी दी गयी। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान डॉ. चित्रा ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता करवाई जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान पीएच.डी. छात्र डॉ. जयंत स्वामी तथा संवित शिक्षण संस्थान, बीकानेर के संस्था प्रधान अभय सिंह टाक उपस्थित रहे।

विश्व जूनोसिस दिवस पर विभिन्न कार्यक्रम

वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर

वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर में 6 जुलाई को विश्व जूनोसिस दिवस के उपलक्ष में विद्यार्थियों हेतु वेटरनरी पब्लिक हेल्थ विभाग द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया। डॉ. दीपिका धूड़िया प्रभारी, वेटरनरी पब्लिक हेल्थ विभाग ने बताया कि प्रत्येक वर्ष 6 जुलाई को विश्व जुनोसिस दिवस के रूप में मनाया जाता है। जिसका उद्धेश्य आमजन में पशुओं से मनुष्य में फैलने वाली संक्रामक बीमारियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है। वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर में सोमवार को विद्यार्थियों हेतु "बढते जूनोसिस के प्रति आपसी दायित्व एवं साझा स्थान" विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं "चमगादड़ से मनुष्य के मध्य बीमारी का बहाव" विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्र में डॉ. देवेन्द्र चौधरी एवं डॉ. वैशाली ने विभिन्न जूनोटिक रोगों के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के आयोजन में डॉ. हेमलता, डॉ. चित्रा और डॉ. जयंत स्वामी का सहयोग रहा।

वेटरनरी महाविद्यालय, जोधपुर

विश्व जूनोसिस दिवस के अवसर पर वेटरनरी महाविद्यालय, जोधपुर में मानव और पशुओं के बीच फैलने वाले संक्रामक रोगों के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के एएचडीपी विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में डॉ. सतेन्द्र कुमार यादव, प्रभारी एल एफ सी , डॉ. रश्मि, प्रभारी वीसीसी तथा डॉ. तनु शर्मा ने विद्यार्थियों को जूनोटिक रोगों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने रेबीज,ट्यूबरक्लोसिस, ब्रुसेलोसिस, एन्थ्रेक्स, लेप्टोस्पायरोसिस, बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू सहित अन्य प्रमुख रोगों के कारण, संक्रमण के तरीके, लक्षण, बचाव एवं नियंत्रण के उपायों की जानकारी दी।

वेटरनरी महाविद्यालय, नवानिया, उदयपुर

वेटरनरी महाविद्यालय, नवानिया, उदयपुर में विश्व जूनोसिस दिवस पर मानव एवं पशुओं के मध्य फैलने वाले संक्रामक रोगों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नवानिया में जूनोटिक रोग जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. अभिषेक गौरव, प्रभारी पब्लिक हेल्थ एवं डॉ. दीपक कुमार शर्मा, प्रभारी सेंटिनल सर्विलेंस साइट (वन हेल्थ) ने विद्यार्थियों को रैबीज, ब्रुसेलोसिस, ट्यूबरकुलोसिस, लेप्टोस्पायरोसिस, एन्थ्रेक्स, एवियन इन्फ्लुएंजा, स्वाइन फ्लू तथा अन्य प्रमुख जूनोटिक रोगों के कारण, संक्रमण के तरीके, लक्षण, बचाव एवं नियंत्रण के उपायों की विस्तृत जानकारी दी। सेमिनार की अध्यक्षता महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. (डॉ.) शिव शर्मा ने की।

सूरती भैंस नस्ल सुधार परियोजना के पुनर्जीवन की दिशा में बढ़े कदम

राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (राजूवास), बीकानेर के माननीय कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास के नेतृत्व, दूरदर्शी सोच एवं सतत प्रयासों से बंद हो चुकी सूरती भैंस नस्ल सुधार परियोजना के पुनर्जीवन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल हुई। कुलगुरु के मार्गदर्शन एवं विशेष प्रयासों से केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान , हिसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आर. के. शर्मा एवं डॉ. सुजॉय के. धारा ने पशुधन अनुसंधान केंद्र , वल्लभनगर का दौरा कर परियोजना की उपलब्धियों, वर्तमान व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। वैज्ञानिकों ने कहा कि परियोजना के पुनः प्रारंभ होने से सूरती भैंस के संरक्षण, नस्ल सुधार, उच्च गुणवत्ता वाले प्रजनन संसाधनों के विकास तथा क्षेत्र के पशुपालकों को बेहतर आनुवंशिक क्षमता वाले पशु उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण सहायता मिलेगी। इससे राज्य में भैंस पालन को भी नई दिशा मिलेगी। इस अवसर पर राजूवास के अनुसंधान निदेशक डॉ. बी. एन. शृंगी, पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानिया के अधिष्ठाता डॉ. एस. के. शर्मा, दक्षिणी राजस्थान के अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. आर. के. नागदा तथा पशुधन अनुसंधान केंद्र, वल्लभनगर के प्रभारी डॉ. लोकेश गौतम उपस्थित रहे।

पशु जैव विविधता संरक्षण पर जागरूकता कार्यक्रम

राजस्थान पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के 'पशु जैव विविधता संरक्षण केंद्र' द्वारा 24 जुलाई को द्रोण चिल्ड्रन सीनियर सेकेंडरी स्कूल में जैव विविधता संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। केंद्र की प्रभारी अधिकारी डॉ. रजनी अरोड़ा ने विद्यार्थियों को पर्यावरण और जैव विविधता के महत्व के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि प्रकृति में संतुलन बनाए रखने और मानव जीवन को सुरक्षित रखने के लिए पशु जैव विविधता का संरक्षण बेहद आवश्यक है। डॉ. अरोड़ा ने बच्चों को पशु–पक्षियों और पर्यावरण के प्रति दयालु व संवेदनशील बनने की प्रेरणा दी। स्कूल स्टाफ और विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक पौधे लगाए और उनकी देखभाल का संकल्प लिया। कार्यक्रम में कुल 37 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम आयोजन में स्कूल प्रधानाचार्य सुमन यादव एवं अन्य शिक्षकों का सहयोग रहा।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 6, 10, 14 एवं 20 जुलाई को गाव भगवानगढ़, माणकासर, गुरूसर मोडिया एवं फरदसर गांवो में तथा 7 एवं 18 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 225 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 14 जुलाई को सुरनाणा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 28 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 9 एवं 28 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इस शिविर में 43 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 8, 9 एवं 24 जुलाई को गांव बेतारना, सोमता एवं मुरतरासीली गांवो में तथा 23 जुलाई को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 107 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 8 जुलाई को गांव सिदरी–खेरवाड़ा में तथा 16 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 78 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 4, 7, 10, 27 एवं 31 जुलाई को गांव माण्डवा, धंता, दरबारी खेड़ा, बलवंतगढ़ एवं उड़ गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 183 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ द्वारा 7, 10, 17 एंव 24 जुलाई को गांव सोमसीसर, दीवानिया, भाड़ंग एवं चाडवास गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 91 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा 15 जुलाई को गांव केली तथा 21 एवं 31 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 75 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर द्वारा 4, 28 एवं 29 जुलाई को गांव फुलादा, सिंयारी एवं चेलावास गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 65 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 1 एवं 2 जुलाई को गांव धसनासर एवं खोडा गांवों में तथा 6–9, 15–18, 20–24 एवं 27–31 जुलाई को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 168 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

सफलता की कहानी

वैज्ञानिक डेयरी फार्मिंग को बनाया आजीविका का सशक्त माध्यम

श्रीगंगानगर जिले के ग्राम 3 एम.एल. के प्रगतिशील पशुपालक श्री संजय पुत्र श्री सुभाष चंद्र ने मेहनत, लगन तथा वैज्ञानिक पशुपालन को अपनाकर डेयरी व्यवसाय में एक नई पहचान बनाई है। 33 वर्षीय संजय जिन्होंने एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की है, प्रारंभ से ही कृषि एवं पशुपालन में रुचि रखते थे। परिवार के पास लगभग 8 बीघा कृषि भूमि होने के कारण उन्होंने खेती के साथ–साथ डेयरी व्यवसाय को आय का अतिरिक्त एवं स्थायी स्रोत बनाने का निर्णय लिया। शुरुआत में संजय पारंपरिक तरीके से पशुपालन करते थे लेकिन उन्हें वैज्ञानिक पशुपालन की पर्याप्त जानकारी नहीं थी। इसी दौरान उनका संपर्क पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों से हुआ। उन्होंने केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर पशुओं के संतुलित पोषण, टीकाकरण, कृमिनाशन, स्वच्छ डेयरी प्रबंधन, हरे चारे के उत्पादन, खनिज लवण मिश्रण के उपयोग तथा आधुनिक डेयरी प्रबंधन की वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण के बाद उन्होंने अपने डेयरी फार्म में वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाना शुरू किया। संजय ने अपने डेयरी व्यवसाय का लगातार विस्तार किया और आज उनके फार्म पर 35 दुधारू गायें हैं। पशुओं को संतुलित आहार, हरा चारा, स्वच्छ पेयजल तथा समय पर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने के कारण उनके पशु स्वस्थ रहते हैं तथा दूध उत्पादन में निरंतर वृद्धि हुई है। वे पशुओं का नियमित टीकाकरण एवं कृमिनाशन करवाते हैं तथा वैज्ञानिकों की सलाह के अनुसार खनिज लवण मिश्रण एवं अन्य आवश्यक पोषक तत्वों का उपयोग करते हैं। अपने 8 बीघा खेत में संजय हरे चारे की खेती भी करते हैं, जिससे पशुओं के चारे की पर्याप्त व्यवस्था हो जाती है और उत्पादन लागत में कमी आती है। गोबर का उपयोग जैविक खाद् बनाने में किया जाता है जिससे खेती की उर्वरता बढ़ने के साथ–साथ अतिरिक्त आय भी प्राप्त होती है। इस प्रकार उन्होंने कृषि और पशुपालन को एक–दूसरे का पूरक बनाकर एक सफल एवं टिकाऊ मॉडल स्थापित किया है। संजय बताते हैं कि वैज्ञानिक डेयरी प्रबंधन अपनाने के बाद उनके पशुओं का स्वास्थ्य बेहतर हुआ, दूध उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई तथा डेयरी व्यवसाय पहले की तुलना में अधिक लाभकारी बन गया। उनकी सफलता से प्रेरित होकर आसपास के अनेक किसान एवं युवा भी वैज्ञानिक पशुपालन की ओर आकर्षित हो रहे हैं। वे समय–समय पर अपने अनुभव अन्य पशुपालकों के साथ साझा करते हैं तथा उन्हें वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं। संजय अपनी गायों से प्रतिदिन 1.5 क्विंटल दूध प्राप्त कर 20 से 25 लाख रूपये सलाना आय प्राप्त कर रहें है। आज संजय अपने क्षेत्र के सफल डेयरी पशुपालकों में गिने जाते हैं। वे अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार के सहयोग, निरंतर परिश्रम तथा पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन को देते हैं। उनका मानना है कि यदि पशुपालक वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाकर पशुपालन करें तो डेयरी व्यवसाय ग्रामीण युवाओं एवं किसानों के लिए आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक आय का एक उत्कृष्ट माध्यम बन सकता है।

सम्पर्क: श्री संजय
3 एम.एल., श्रीगंगानगर (मो. 6350154697)

मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना : राजस्थान सरकार का पशुपालकों हेतु आर्थिक सुरक्षा कवच

योजना का उद्देश्यः प्रदेश के पशुपालकों के हितों को ध्यान में रखते हुये उनके अमूल्य पशुधन का बीमा कर पशुपालकों को वित्तीय सुरक्षा व् आर्थिक सुदृढ़ीकरण प्रदान करना। राजस्थान सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2024–25 में की गई बजट घोषणा मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के अनुसार प्रदेश में प्रथम पांच लाख दुधारू गाय/ पांच लाख भैंस/पांच लाख भेड़/पांच लाख बकरी तथा 1 लाख उष्ट्र पशु (ऊंट का बीमा करते हुये कुल 21 लाख और वित्तीय वर्ष 2025–26 के लिए कुल 42 लाख पशुओ का बीमा कवरेज प्रदान किया जाना प्रस्तावित है। इस योजना में 400 करोड रूपये का व्यय होगा।

योजना में पंजीकरण की जानकारी

1. राजस्थान राज्य के समस्त जनाधार कार्ड धारक पशुपालक इस योजना के पात्र होगें तथा इन पशुपालको द्वारा बीमा विभाग से प्रदत वेबसाइट में योजना लाभ हेतु आवेदन किया जाना आवश्यक है तथा लॉटरी द्वारा चयनित पशुपालको के पशु का निःशुल्क बीमा किया जायेगा।
2. योजनान्तर्गत राज्य के समस्त गोपाल क्रेडिट कार्ड धारक पशुपालक एवं समस्त लखपती दीदी पशुपालकों को प्रथम प्राथमिकता से लाभान्वित किया जायेंगा।
3. पशुपालक बीमा हेतु केवल टैग्ड पशु का ही पंजीकरण किया जा सकेगा। जिन पशुपालको के पशुओं की टैंगिग नही है वे अपने पशुओं के टैंग लगवाये जाने के उपरान्त ही पंजीकरण करवा सकेगें।
4. राज्य के गोपाल क्रेडिट कार्ड धारक पशुपालक एवं समस्त लखपती दीदी पशुपालकों तथा लॉटरी द्वारा चयनित जन आधार कार्ड धारक पशुपालक के अधिकतम 02 दुधारू गाय, 02 दुधारू भैंस, 01 दुधारू गाय एवं 01 दुधारू भैंस, 10 बकरी, 10 भेड, 10 उष्ट्रवंश पशु का निःशुल्क बीमा किया जायेगा।

ध्यान रखने योग्य बातें

1. इस योजनान्तर्गत उन्हीं पशुओं का बीमा करवाया जायेगा जिसका किसी अन्य पशु बीमा योजनान्तर्गत बीमा नही किया गया हो।
2. ''मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना'' के अन्तर्गत पशुपालकों के देशी/संकर दूध देने वाले पशु गाय एवं भैंस, भारवाहक पशु–ऊँट/ऊँटनी एवं अन्य छोटे रोमन्थी पशु जैसे बकरी व भेड़ का ''एक वर्ष'' के लिये निःशुल्क बीमा किया जाना प्रस्तावित है।
3. बजट घोषणा अनुसार प्रथमतः 21 लाख पशुओं का बीमा किया जाना है। भेड़ एवं बकरी की एक कैटल यूनिट में 10 पशु तथा दुधारू गाय/भैंस एवं ऊँट के संदर्भ में एक कैटल यूनिट में 01 पशु माना जायेगा। यदि किसी पशुपालक के पास 10 से कम भेड़–बकरी है तो ऐसी स्थिति में एक कैटल यूनिट में पशु संख्या की पात्रता कम की जाकर पशुपालक के पास उपलब्ध भेड़–बकरी का बीमा किया जा सकेगा।
4. जिलों को उनके पशुओं की संख्या के आधार/अनुपात में बीमा के लक्ष्य निर्धारित किये गये है ताकि सम्पूर्ण प्रदेश के पशुपालकों को समानुपातिक व्यवस्था के तहत लाभ प्राप्त हो सके।
5. किन्हीं परिस्थितियों में जिलें को आंवटित लक्ष्य पूर्ण नहीं होने की स्थिति में प्रत्येक तिमाही पर इसकी समीक्षा कर अन्य जिलों को आवंटित किया जाना प्रस्तावित है।
6. निर्धारित जिलेवार लक्ष्यों में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति पशुपालको हेतु क्रमशः 16 प्रतिशत तथा 12 प्रतिशत बीमा लक्ष्य आरक्षित रखे जायेगें। अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति पशुपालको के नही होने पर अन्य श्रेणी के पशुपालकों को लाभान्वित किया जायेगा।
7. पशु की कीमत का मूल्यांकन पशु के स्वास्थ्य, दुग्ध उत्पादन क्षमता, आयु, ब्यात् व नस्ल आदि के आधार पर प्रचलित बाजार मूल्य अनुसार पशु चिकित्सक, पशुपालक एवं बीमा प्रतिनिधि द्वारा आपसी सहमति से किया जावेगा तदापि बीमा के लिये 1 कैटल यूनिट पशु की अधिकतम कीमत 40,000/– रूपये ही होगी।
8. योजना का क्रियान्वयन ट्रस्ट मोड पर राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग द्वारा किया जाएगा जबकि पशुपालन विभाग नोडल विभाग के रूप में कार्य करेगा।

बीमा क्लेम किस प्रकार करे

1. राज्य बीमा एवं प्रावधायी निधि विभाग (साधारण बीमा) विभाग चयनित पशुपालकों के पशुओं का बीमा कराने के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत, राजस्व ग्राम हेतु तिथिवार कार्यक्रम निर्धारित करेगा जिसकी सूचना पशुपालकों को एसएमएस या अन्य माध्यम से दी जायेगी।
2. बीमा प्रक्रिया उपरान्त पशुपालक को मोबाईल पर एस.एम.एस के माध्यम से बीमा पॉलिसी का लिंक प्राप्त होगा।
3. यदि बीमित पशु का टैग किसी कारणवश गुम हो जाता है तो उस स्थिति में पशुपालक को बीमा विभाग को सूचना देनी होगी। सूचना प्राप्त होने के 1 दिन के भीतर बीमा विभाग पशु का री–टैगिंग करवाकर पॉलिसी एवं सॉफ्टवेयर में नये टैग की प्रविष्टि करेगा।
4. पशुपालक द्वारा पशु की बिक्री उपहार दिये जाने की स्थिति में बीमा पॉलिसी समाप्त मानी जायेगी।
5. पशु की मृत्यु होने पर पशुपालक द्वारा शीघ्र ही इसकी सूचना बीमा विभाग को देनी होगी।
6. बीमा प्रतिनिधि द्वारा सर्वे तथा पशु चिकित्सक द्वारा मृत पशु का पोस्टमॉर्टम परीक्षण कर समस्त प्रक्रिया को निर्धारित सॉफ्टवेयर ऐप में इन्द्राज किया जायेगा।
7. बीमा विभाग द्वारा 21 कार्य दिवस के भीतर मृत बीमित पशु की दावा राशि का भुगतान सम्बन्धित पशुपालक को किया जायेगा।
8. योजना के तहत किसी भी प्राकृतिक या आकस्मिक दुर्घटना जैसे आग लगने, सडक दुर्घटना, आकाशीय बिजली गिरने, प्राकृतिक आपदा, जहरीला घास खाने या सर्प, कीडा काटने, किसी बीमारी आदि में मृत्यु होने पर बीमा क्लेम मिलेगा। पशुपालक को बीमा पॉलिसी जारी होने पर दुर्घटना जैसे आग लगने, सडक दुर्घटना, आकाशीय बिजली गिरने, प्राकृतिक आपदा, जहरीला घास खाने या सर्प,कीडा काटने की स्थिति को छोड कर 21 दिवस का ग्रेस पीरियड के बाद ही पशु की मृत्यु होने की स्थिति में क्लेम दावा भुगतान का लाभ दिया जायेगा। दावा भुगतान की जानकारी हेतु एक मैसेज पशुपालक के मोबाईल नम्बर पर प्रेषित किया जायेगा।

डॉ. देवीसिंह, डॉ. नीरज कुमार शर्मा एवं डॉ. नरेंद्र सिंह
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

रेबीज (हिड़काव) संक्रमण से सुरक्षा और प्रभावी रोकथाम के उपाय

रेबीज एक विषाणुजनित रोग है जो मुख्य रूप से स्तनधारी प्राणियों को प्रभावित करता है। यह रोग सामान्यतः जंगली पशुओं में पाया जाता है किन्तु मनुष्य तथा पालतू पशु और पशुधन भी इससे संक्रमित हो सकते हैं। रेबीज एक जूनोटिक रोग है, अर्थात यह पशुओं से मनुष्यों में फैलने की क्षमता रखता है। संक्रमित व्यक्ति या पशु में व्यवहार संबंधी परिवर्तन, अत्यधिक उत्तेजना, आक्रामकता, पागलपन, पक्षाघात तथा अंततः मृत्यु तक हो सकती है। रेबीज मुख्य रूप से दो रूपों में प्रकट होता है–उग्र रूप और लकवाग्रस्त रूप। मनुष्यों में इस रोग को हाइड्रोफोबिया या जलटांका भी कहा जाता है, क्योंकि गले की मांसपेशियों में ऐंठन होने के कारण रोगी पानी पीने में असमर्थ हो जाता है।

रेबीज का कारण: रेबीज का कारक रैब्डोवायरस समूह का विषाणु है। यह मुख्य रूप से तंत्रिका ऊतको, लार ग्रंथियों तथा लार में पाया जाता है। बहुत कम अवसरों पर यह लसीका द्रव, दूध और मूत्र मे भी पाया जाता है। जबकि रक्त में इसकी उपस्थिति सामान्यतः नहीं होती है। यह अपेक्षाकृत बड़े आकार का विषाणु है जो तेज धूप, गर्म पानी, क्लोरोफॉर्म, फॉर्मेलिग, लाल दवा तथा क्षारीय पदार्थो के प्रभाव से नष्ट हो जाता है। यद्यपि रेबीज मनुष्यों और सभी उष्ण रक्तीय प्राणियों में पाया जाता है फिर भी श्वान, लोमडी, भेड़िया, बिल्ली चूहा तथा वेम्पायर प्रजाति की चमगादड़ इसके प्रमुख वाहक माने जाते है और इनके माध्यम से यह रोग अन्य जीवों में अधिक तेजी से फैलता है।

रेबीज कैसे फैलता है:

- ❖ रेबीज का संक्रमण केवल रेबीजग्रस्त पशु से फैलता है।
- ❖ पशुओं में यह रोग अधिकतर संक्रमित श्वानों के काटने से फैलता है।
- ❖ संक्रमित पशु की लार त्वचा के घाव, कट, खरोंच या क्षतिग्रस्त त्वचा पर लगने से विषाणु शरीर में प्रवेश करता है।
- ❖ श्वान रेबीज का प्रमुख वाहक माना जाता है।
- ❖ श्वानों में रोग के लक्षण दिखाई देने से लगभग 5 दिन पहले ही लार में विषाणु मौजूद हो सकते हैं।
- ❖ रेबीज के मामलें प्रायः गर्मियों में अधिक देखे जाते है।
- ❖ बहुत कम मामलों में बिना उबाला / गर्म किया हुआ संक्रमित पशु का दूध पीने से संक्रमण हो सकता है।

रोग के लक्षण:

- ❖ पशु अस्थिर दिखाई देता है और चलते समय लड़खड़ाता है। कई बार वह अन्य पशुओं या दीवार से टकरा जाता है।
- ❖ हल्का बुखार, अस्वस्थता, भूख में कमी तथा दूध उत्पादन में गिरावट देखी जाती है।
- ❖ कानों का बार–बार कांपना और हिलना एक सामन्य लक्षण हो सकता है।
- ❖ मुख की मांसपेशियों में पक्षाघात होने के कारण पशु मुंह खुला रखता है, जैसे कोई वस्तु गले में फंसी हो। इसके साथ अत्यधिक लार गिरती है और पशु दांत पीसता है।
- ❖ पशु को निगलने और पानी पीने में कठिनाई होती है तथा वह बिना आवाज के रंभाने का प्रयास करता है।
- ❖ स्वर रज्जुओं के पक्षाघात के कारण मुंह से कर्कश या असामान्य आवाज निकलती है।
- ❖ यौन उत्तेजना बढ़ जाती है, पशु बार–बार पेशाब करता है।

समय–समय पर करें ये काम:

पशुपालकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने पशुओं को समय–समय पर रेबीज और अन्य रोगों के टीके लगवाते रहें। यह न सिर्फ पशुओं को सुरक्षित रखता है, बल्कि पशुपालक और उनके परिवार को भी संभावित संक्रमण से बचाने में मदद करता है, यदि किसी श्वान ने गाय, भैंस को काट लिया हो तो तुरंत पशुचिकित्सक से सलाह ले और पशु को रेबीज का टीका जरूर लगवाएं।

उपचार एवं रोकथाम:

- ❖ रेबीज एक अत्यंत गंभीर एवं लगभग हमेशा घातक रोग है। इस रोग के लिए कोई प्रभावी विशिष्ट उपचार उपलब्ध नहीं है। इसलिए इसका बचाव ही सबसे महत्वपूर्ण उपाय है। एक बार नैदानिक लक्षण प्रकट होने के बाद रोग का उपचार संभव नहीं माना जाता।
- ❖ रेबीज से संक्रमित मवेशी अपनी लार के माध्यम से विषाणु का उत्सर्जन करते हैं। इसलिए पशुचिकित्सकों तथा पशुओं को संभालने वाले व्यक्तियों को संदिग्ध पशु के संपर्क में आते समय व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण अवश्य अवश्य पहनने चाहिए।
- ❖ जो व्यक्ति बार–बार रेबीज के जोखिम वाले पशुओं के संपर्क में रहते है उन्हें पूर्व उद्भासन टीकाकरण कराया जाना चाहिए। यदि उनके रक्त में एंटीबॉडी का स्तर 0.1 IU/mL से कम हो जाए तो बूस्टर डोज दी जानी चाहिए।
- ❖ रोग के संचरण चक्र को रोकने के लिए विशेष रूप से श्वानों का नियमित टीकाकरण अत्यंत आवश्यक है।
- ❖ प्री–एक्सपोजर प्रोफिलैक्सिस द्वारा श्वानों में संक्रमण की संभावना कम की जा सकती है और मानव तथा पशु दोनों में रोग के प्रसार को नियंत्रित किया जा सकता है।
- ❖ संक्रमित सतहों और उपकरणों का 70 प्रतिशत आइसोप्रोपाइल अल्कोहल से प्रभावी रूप से परिशोधन किया जा सकता है।

घाव प्रबंधन :

- ❖ घाव की प्रारंभिक सफाई हल्के साबुन और स्वच्छ पानी से अच्छी तरह करनी चाहिए।
- ❖ यदि घाव पर हल्दी, मिर्च पौधों के अर्क या अन्य किसी उत्तेजक पदार्थ का प्रयोग किया गया हो तो उसे पर्याप्त मात्रा में साफ पानी से धोकर हटा देना चाहिए।
- ❖ गहरे घाव की स्थिति में रेबीज इम्युनोग्लोबुलिन को घाव के आसपास और भीतर स्थानीय रूप से प्रायः इंसुलिन सिरिंज की सहायता से लगाने की सलाह दी जाती है।
- ❖ इसके बाद आवश्यकता होने पर दबाव पट्टी की जा सकती है।
- ❖ संपर्क होने के बाद एंटी–रेबीज टीकाकरण भी कराया जा सकता है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

मानसून के दौरान रेत मक्खी जनित रोगों के जोखिम और बचाव के उपाय

मानसून का मौसम कृषि उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है, उतना ही यह अनेक कीट–जनित रोगों के प्रसार का भी अनुकूल समय होता है। वर्षा के कारण पशुबाड़ों में नमी, गोबर, जैविक कचरे तथा जलभराव की स्थिति बनने लगती है जिससे विभिन्न प्रकार के कीटों की संख्या तेजी से बढ़ जाती है। इन्हीं कीटों मे एक अत्यंत छोटा लेकिन सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण कीट है ''रेत मक्खी''। रेत मक्खी का महत्व केवल पशुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मनुष्यों और पशुओं दोनो में कई गंभीर रोगों के प्रसार में भूमिका निभाती है। रेत मक्खी लगभग 2–3 मिमी लम्बाई का एक सूक्ष्म रक्तचूषक कीट है। इसका शरीर हल्के भूरे या पीले रंग का तथा पंख बालों जैसे महीन रोमों से ढके होते है। यह लंबी दूरी तक नहीं उड़ सकती। केवल मादा रेत मक्खी रक्तपान करती है क्योंकि अंडो के विकास के लिए उसे रक्त की आवश्यकता होती हैं। मादा रेत मक्खी को अंडे विकसित करने के लिए प्रोटीन की आवश्यकता होती है, जिसके लिए वह रात्री या सायं के समय पशुओं और मनुष्यों का रक्त चूसती है। मानसून के समय पशुबाड़ो में बनने वाली निम्न परिस्थितियां इनके प्रजनन के लिए आदर्श वातावरण तैयार करती है।

- ❖ जलभराव, गीली मिट्टी एवं अत्यधिक नमी
- ❖ गोबर एवं जैविक कचरे का ढेर
- ❖ पशुबाड़े की दीवारों एवं फर्श की दरारें
- ❖ झाड़ियां एवं घनी वनस्पति
- ❖ अपर्याप्त सफाई

यदि इन परिस्थितियों का समय पर प्रबंधन न किया जाए तो रेत मक्खियों की संख्या कई गुना बढ़ सकती है। रेत मक्खियां कई रोगजनकों की वाहक होती है। प्रमुख रोग निम्नलिखित है।

लीशमैनियासिस

कालाजार: भारत में रेत मक्खी द्वारा फैलने वाला सबसे महत्वपूर्ण रोग कालाजार है। इसके प्रमुख लक्षण है–लंबे समय तक रहने वाला बुखार, वजन घटना, रक्ताल्पता (एनीमिया), यकृत एवं प्लीहा का बढ़ जाना, कमजोरी एवं थकान। यदि समय पर उपचार न मिले तो यह जानलेवा भी हो सकता है। इसमें चिकित्सक की देखरेख में Liposomal Amphotericin-B से उपचार किया जाता है।

त्वचीय लीशमैनियासिस: इस रोग में त्वचा पर घाव बन जाते है जो धीरे–धीरे बढ़ सकते है। इसमें घाव की स्थिति के अनुसार स्थानीय उपचार या Amphotericin-B या Miltefosine दिया जाता है।

सैंडफ्लाई फीवर: कुछ देशों में रेत मक्खियां ऐसे विषाणुओं का प्रसार करती है जिनसे तेज बुखार, सिरदर्द एवं शरीर दर्द जैसी समस्याएं उत्पन्न होती है। इसका कोई विशिष्ट एंटीवायरल उपचार नही है। आराम, पर्याप्त तरल पदार्थ तथा बुखार/दर्द के लिए लाक्षणिक उपचार दिए जाते हैं।

चंडीपुरा वायरस और दिमागी बुखार: जब रेत मक्खी किसी संक्रमित जीव को काटने के बाद बच्चों या वयस्कों को काटती है तो यह वायरस सीधे रक्तप्रवाह में प्रवेश कर जाता है। यह मस्तिष्क पर हमला करता है जिससे तीव्र बुखार, उल्टी, ऐंठन और दिमागी सूजन होने लगती है। इसमें अधिकांश मामलों में कोई विशिष्ट एंटीवायरल उपलब्ध नही होता बल्कि पशु को शीघ्र अस्पताल में भर्ती कर सहायक उपचार दिया जाता है।

बचाव एवं नियंत्रण के व्यावहारिक उपाय: वन हेल्थ अवधारणा के तहत यदि पशुबाड़ो की स्वच्छता पर ध्यान दिया जाए, कीट नियंत्रण किया जाए तथा ग्रामीण समुदाय को जागरूक बनाया जाए तो न केवल पशुओं का स्वास्थ्य बेहतर होगा बल्कि मनुष्यों में भी कई संक्रामक रोगों का खतरा कम किया जा सकता है।

पशुबाड़े की संरचना और स्वच्छता में सुधार

- ❖ **दरारों को भरे:** पशुबाड़े की कच्ची दीवारों या फर्श में बनी दरारों व छेदों को चूने या सीमेंट से अच्छी तरह बंद कर दे, ताकि मक्खियां उनमें अंडे न दे सके।
- ❖ **पशु बाड़े को सूखा रखे:** पशु बाड़े में पानी जमाव न होने दें। फर्श को ढलानदार बनाएं ताकि मूत्र और पानी तुंरत बाहर निकल जाए।
- ❖ **गोबर का सही निस्तारण:** गोबर को पशुबाड़े के ठीक पास ढेर करने के बजाय बाड़े से दूर कम्पोस्ट गड्डे में डालकर ढक दें।
- ❖ **झाड़ियों की सफाई:** पशुबाड़े के आसपास उगी घास एवं झाड़ियों को नियमित रूप से हटाएं और अनावश्यक वनस्पति की छंटाई करें।

कीट नियंत्रण

- ❖ **कीटनाशक छिड़काव:** मानसून शुरू होते ही और मानसून के दौरान स्थानीय पशुचिकित्सक या स्वास्थ्य कार्यकर्ता की सलाह से बाड़े की दीवारों पर सिंथेटिक पाइरेथ्रॉइडस का छिड़काव करें।
- ❖ **चूने का प्रयोग:** बाड़े के फर्श और दीवारों के निचले हिस्सों पर नियमित रूप से बुझा हुआ चूना छिड़के। यह नमी सोखता है और मक्खियों के लार्वा को नष्ट करता है।
- ❖ **धूंए/देशी उपायों का प्रयोग:** शाम के समय बाड़े में नीम की सूखी पत्तियों या लोबान का धुंआ करने से मक्खियां और मच्छर दूर रहते हैं।

पशुओं और परिवार की सुरक्षा

- ❖ **पशुओं पर सुरक्षित विकर्षक:** पशुओं के शरीर पर नीम के तेल या पंजीकृत एक्टोपैरासाइटिसाइडस का छिड़काव करें।
- ❖ **बच्चो की सुरक्षा:** बच्चों को शाम के समय पशुबाड़े के पास न खेलने दें। सोते समय नीम/मच्छर रोधी/मच्छर रोधी क्रीम का प्रयोग करें और संभव हो तो बारीक जालीदार मच्छरदानी का उपयोग करें।

निष्कर्ष: मानूसन के मौसम में पशुबाड़ो की उचित सफाई, जलभराव की रोकथाम, गोबर एवं जैविक कचरे का वैज्ञानिक प्रबंधन तथा कीट नियंत्रण जैसे सरल उपाय रेत मक्खियों की संख्या को काफी हद तक कम कर सकते हैं। इससे कालाजार सहित अन्य कीट–जनित रोगों तथा कुछ क्षेत्रों में एन्सेफलाइटिस के जोखिम को भी घटाया जा सकता है। स्वच्छ पशुबाड़ा, स्वस्थ पशु और जागरूक पशुपालक ही सुरक्षित ग्रामीण की आधारशिला है।

डॉ. जयन्त स्वामी
पीएचडी स्कॉलर, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

डेयरी फार्मिंग : कौशल विकास से बढ़ेगी पशुपालकों की आय

राजस्थान दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में अग्रणी राज्यों में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इस उपलब्धि के मूल में राज्य के लाखों लघु, सीमांत एवं सामान्य पशुपालकों का सतत परिश्रम, समर्पण एवं पशुपालन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता निहित है। बदलते समय में डेयरी क्षेत्र केवल आजीविका का साधन न होकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने, रोजगार सृजन तथा किसानों की आय में वृद्धि का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। ऐसे में पशुपालकों का कौशल विकास समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। वैज्ञानिक एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाकर डेयरी व्यवसाय को अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है। संतुलित पशु पोषण, उन्नत नस्लों का संवर्धन, प्रजनन प्रबंधन, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन, रोगों की रोकथाम, जैव–सुरक्षा उपाय, आधुनिक डेयरी प्रबंधन तथा मूल्य संवर्धन जैसी तकनीकों का समुचित ज्ञान पशुपालकों की उत्पादकता एवं लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि करता है। आधुनिक तकनीकों के प्रभावी उपयोग से उत्पादन लागत में कमी आती है, दूध की गुणवत्ता में सुधार होता है तथा बाजार में बेहतर मूल्य प्राप्त होने के अवसर बढ़ते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक पशुपालक वैज्ञानिक सोच, आधुनिक तकनीक एवं सतत कौशल उन्नयन को अपने डेयरी व्यवसाय का अभिन्न अंग बनाए। ज्ञान और कौशल ही वह आधार हैं, जिनके माध्यम से प्रति पशु दुग्ध उत्पादन में वृद्धि, गुणवत्तापूर्ण दुग्ध उत्पादन, संसाधनों का कुशल उपयोग तथा अतिरिक्त आय के स्थायी अवसर सुनिश्चित किए जा सकते हैं। कौशल सम्पन्न पशुपालक न केवल अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर सकता है, बल्कि प्रदेश की दुग्ध उत्पादन क्षमता एवं ग्रामीण विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। आइए, हम सभी आधुनिक डेयरी फार्मिंग की वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने, नियमित प्रशिक्षण के माध्यम से अपने कौशल का निरंतर विकास करने तथा पशुपालन को आत्मनिर्भरता, समृद्धि और ग्रामीण विकास का सशक्त आधार बनाने का संकल्प लें। यही विकसित पशुपालन, समृद्ध किसान और आत्मनिर्भर राजस्थान की दिशा में हमारा सामूहिक प्रयास होगा।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया

संपादक

डॉ. संजय सिंह

डॉ. वैशाली

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया